ANUBHAVS

तूने मुझे घोर संकट में बचाया

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

– सुनिता येरम

मेरा माँ–बाप बापूराया अपने भक्तों के लिये कदम कदम पर खड़ा रहकर अपने भक्तों का रक्षण करता रहता है । इस बात का अनुभव मुझे कई बार हुआ । मेरा यह अनुभव सन २००६ का है ।

मई महीने में मैं अपने गांव वेंगुर्ला गयी थी । वहाँ पर मेरे माता–पिता का काफी बड़ा घर है । परंतु मुझे भाई न होने के कारण वह घर बंद ही रहता है । मेरी छोटी बहन व बहनोई सितम्बर महीने में मर चुके थे, अतः घर काफी दिनों से खोला ही नहीं गया था । हमारे आम के पेड़ों वाली जमीन का कोर्ट में कस चल रहा था । उस केस की तारीखों पर मैं अकेली ही गांव जाया करती थी । उसी समय जितनी देर के लिए घर खुलता था, उतना ही घर खुला रहता था । इस बार भी मैं ऐसे ही गांव गयी हुयी थी ।

उस दिन कोर्ट का काम–काज समाप्त होने के बाद शाम को लगभग पांच–साढे पांच मैं घर पर आयी और अंदर प्रवेश करने के पहले ही मेरी नजर बरामदे में लगे मीटर बॉक्स पर पड़ी । वहाँ पर कुछ हलचल दिखी, अतः मैं उसे करीब से जाकर देखूँ इसके पहले ही सर–सर की आवाज करता हुआ एक प्राणी कौले के छप्पर में घुस कर अदृश्य हो गया । मुझे सिर्फ उसकी पूँछ दिखायी दी । मैं काफी ड़र गयी । घर में घुसने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी । परंतु जाना तो पड़ना ही था । अब क्या करूँ ? अंततः बापूजी को मनःपूर्वक गुहार लगायी । वैसे भी दूसरा कौन हमार रक्षक है ? है ना ?

बापूजी का नाम जप करती हुयी ही घर में घुसी । सभी बल्ब जलाए । पूरे घर में उदी छिडकी । मुँह से जप शुरु ही था । मैंने मन ही मन बापूजी से प्रार्थना की, ''बापू, प्लीज, मैं जब तक यहाँ पर हूँ, तब तक अभी मैंने जो कुछ देखा है वो मुझे फिर से न दिखने दो, उसे बाहर के बाहर ही निकाल दो ।'' घर बंद होने के कारण चमदागडियाँ घर खूब गंदा कर देती थी, अतः घर में घुसते ही घर साफ करना पड़ता था । उस दिन भी मैंने बापूजी का नामस्मरण करते हुये घर साफ किया । उसके बाद मैं चार दिनों तक उस घर में रही । मेरा बापू मेरी रक्षा करने के लिए वहाँ था ही । परंतु मुझे वहाँ फिर कुछ भी दिखायी नहीं पड़ा । इस विषय में मैंने अन्य किसी को कुछ बताया भी नहीं क्योंकि इस तरह की बात यदि गांववालों को बता दी जाए तो उसे रहस्यात्मक रंग दे दिया जाता था ।

हमारे पड़ोस के लोग कहा करते थे, ''तुम्हारे बरामदे में दिये जलते हुय दिखायी देते हैं । घर में कुछ गिरने की आवाज आती है ।'' इन्हीं कारणों से अनायास ही कोई घर के आस–पास आता भी नहीं था । उनकी ऐसी बातें सुनकर मैं तो सारा भार बापूजी पर डालकर चुप बैठ गयी । मैं तो सिर्फ इतना जानती थी कि जिस घर में मानवों का आना जाना होता रहता है उस घर में ऐसी समस्याएं नहीं होती । परंतु मेरी भी मजबूरी थी । मैं बारम्बार वहाँ जा नहीं सकती थी और अब तो मेरी बहन भी नहीं थी ।

ऐसे ही चार दिन निकल गए । मेरे मुंबई के लिए निकलने से एक दिन पहले अचानक चार आदमी मुझे मिलने के लिए आए और मुझसे पूँछने लगे कि,''क्या आप चार महीनों के लिए घर भाडे पर दोगी ?'' घर बंद रहने की अपेक्षा उपयोग में रहना अच्छा, यह बिचार करके चार महीनों का करारनामा करके उन्हें घर भाड़े पर देकर मैं मुंबई वापसा आ गयी ।

पंद्रह दिनों के बाद कोर्ट की तारीख पर मैं फिर गांव गयी। तो उन चार व्यक्तियों ने मुझे बताया कि,''मौसी, तुम्हारे जाने के चार दिनों के बाद हमने चहाँ पर एक साँप मारा । हम दोपहर के समय बरामदे में लेटे थे तभी हमने देखा कि तुम्हारे माँ-बाप की तसबीर के ऊपर एक साँप लटक रहा था । तुरंत ही और चार लोगों को बुलाकर हमने उसे मारा ।'' ऐसा सुनकर मैं तो सन्न रह गयी । इसका मतलब यह कि वो (साँप) घर में ही था । परंतु मेरी प्रार्थना सुनकर मेरे उस माँ-बाप (बापूजी) बापूराया ने उसे मुझे दिखने नहीं दिया । धन्य हैं बापूमाऊली !

किती आधी-व्याधी तू केल्यास शांत ।
रक्षिलेस ना मला तू अहोरात्र ।
विसरलास ना मला तू अहोरात्र ।
स्मृर्तगामी बापू, दत्तगुरु ओळखलो ।
अनिरुद्धा, तुझा मी किती ऋणी झालो ।।

ANUBHAVS

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com